॥ सुयं मे आउसं ॥

श्रुतसंवर्धन का संवाद-सेतु

श्रुतदीप

वर्ष - प्रथम • वि.सं. २०७४ • अंक - २ अक्तूबर २०१७

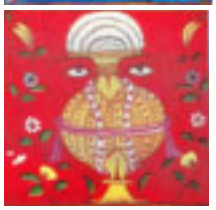
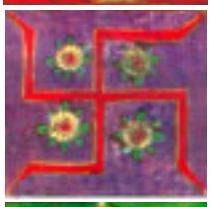

हमारी श्रुतसंपदा अतीत, वर्तमान और भविष्य

डॉ. जितेंद्र बी शाह

विगत अनेक शताब्दियों से जैनधर्म महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों के कारण विश्व में शीर्षस्थ रहा है, परंतु क्षोभ का विषय यह है कि आज ज्ञान की धारा कुंठित होती जा रही है। वर्तमान स्थिति पर चर्चा करने से पूर्व, जैन श्रुतसंपदा के अतीत, वर्तमान और भविष्य में दृष्टि डालना प्राथमिकता है।

इतिहासकार श्री धर्मपालजी द्वारा किये गये सर्वेक्षण के अनुसार, भारत में अंग्रेजों के आने से पूर्व, पूरे देश में कुल पांच करोड से अधिक हस्तलिखित पांडुलिपियां उपलब्ध थी। दुर्भाग्य से पिछले केवल एक सौ पचास वर्षों में चार करोड प्रतियां गायब हो गई अथवा नष्ट हो चुकी है और यह सब हम खुली आंखो से देखते रहे। विनाश के कारणों की चर्चा करने के अनेक मुद्दे हो सकते हैं, मगर बडा प्रश्न यह है कि, हम इस विनाश को क्यों नहीं रोक पाये? उत्तर सरल है - ज्ञान की तरफ हमारी घोर उदासीनता। भारतीय संस्कृति की रक्षा के दो मुख्य मूलाधार है— प्राचीन स्थापत्य एवं प्राचीन हस्तलिखित साहित्य। स्थापत्य की रक्षा के लिए जागृति भी बनी और बहोत प्रयास भी हुए, मगर शास्त्र रक्षा के लिए कोई सार्थक प्रयास नही हुए। पिछले सौ वर्षों के कालखंड में इस दिशा में जो कार्य हुए हैं, उनका अवलोकन भी हमें करना होगा। कौन-कौन से कार्य हुए? कैसे हुए? उन उपलब्धियों के बाद वर्तमान स्थिति क्या है? इन्हीं आधारों पर भविष्य के लक्ष्य का निर्धारण भी संभव होगा।

लगभग पंद्रह वर्ष पूर्व भारत सरकार द्वारा एक 'मिशन' की नींव रखी गई-'नेशनल मिशन फॉर मेन्युस्क्रीप्टस'(NMM) जिसका लक्ष्य रखा गया— भारत की प्राचीन हस्तलिखित पांडुलिपियों का संरक्षण करना, प्राचीन लिपि और भाषा के जानकार विद्वानों को प्रतिभा संपन्न बनाना, उपलब्ध साहित्य (पांडुलिपियों) की सूचि तैयार करना, और संपादन में सहायक संसाधनों को उपलब्ध करवाना।

आज भी विश्व में सबसे प्राचीन शास्त्रों का सर्वाधिक संग्रह केवल भारत के पास है। एक करोड पांडुलिपियों में बीस लाख प्रतियां केवल जैन शास्त्रों की है। यह भी आश्चर्य की बात है कि, इतने बडे विध्वंस और विनाशलीला में से इतनी बडी संख्या में जैन धर्म की इतनी संपदा कैसे सुरक्षित रह पायी? मुख्य रूप से जैनधर्म की श्रुतभक्ति की भावना और परंपरागत ग्रंथ रक्षा की शैली के कारण ही यह संभव हो पाया। अन्य परम्पराओं में यह अभाव रहा। यह अपने पूर्वजों का आज जैनों पर बडा उपकार है।

आज संपूर्ण भारत में एक हजार से अधिक ज्ञानभंडार हैं, जहाँ उपलब्ध बीस लाख पांडुलिपियों में लगभग तीस हजार शास्त्र ऐसे हैं, जिनकी जानकारी भी हमें नही है। कौन-सी प्रति किस भंडार में है? इसकी एकत्रित जानकारी नहीं है। कितने ग्रंथ हैं, यह भी पता नही है। पिछली शताब्दी में पूज्य आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरिजी महाराज साहबने 'जैन ग्रंथावली' का कार्य किया था। उसी तरह पुणे स्थित भांडारकर इन्स्टिट्युट में प्रो. हरि दामोदर वेलणकरने 'जिनरत्नकोश' के रूप में बडा कार्य किया। जैन ग्रंथावली में अथवा जिनरत्नकोश में एक ही ग्रंथ की भिन्न-भिन्न पांडुलिपियां अन्य कौन-कौन से भंडारों में उपलब्ध है? इसकी जानकारी है। शोध, संशोधन, संपादन आदि के लिए एक

ही स्थान पर पूरक जानकारी सहजता से मिल सके, इस अभिप्राय के साथ पूज्य मुनिराज श्रीपुण्यविजयजी म.सा.ने इस क्षेत्र में बहुमूल्य कार्य किया। आगम संशोधन सहित इस कार्य के अध्यवसायी परिश्रम को पू.मुनिराज श्री जंबूविजयजी म.सा. ने आगे वृद्धिंगत किया। इस प्रकार के कार्यों का आज अभाव है। आज ऐसे विश्वस्तरीय कार्य की आवश्यकता है। नियोजनबद्धरूप से तमाम सूचिपत्रों का समन्वय और व्यापक 'डाटाबेझ' की बडी आवश्यकता है। इस प्रकार का 'कैटलोग्स ऑफ केटलोगरम (सूचिपत्रों का सूचिपत्र)' बनाने का कार्य पिछले बीस पच्चीस वर्षों से 'मद्रास युनिवर्सिटी' द्वारा चल रहा है। "जैन शास्त्र संवर्धन के विषय में पूज्य आनंदसागरजी महाराज साहब का नाम उच्चस्थ है। ज्ञान के क्षेत्र में उनके अकेले हाथों से जो कार्य हुआ है, यह खास उल्लेखनीय घटना है। लगभग सौ वर्ष पूर्व आचार्य श्री धर्मसूरीश्वरजी महाराज साहब (काशीवाला) द्वारा काशी में रहकर संपादन कार्य की नींव रखी गई थी। उनके अथक प्रयास से अनेक प्रकांड पंडित तैयार हुए। पं.हरगोविंददास ने पाईयसद्दमहण्णवो नामक प्राकृत शब्द कोश बनाया, उसके सम्मुख हम आज सौ वर्ष बाद भी दूसरा शुद्धि-वृद्धि युक्त कोश नहीं बना पाये हैं।

श्रुतसंपदा के अतीत और वर्तमान का अध्ययन करने के पश्चात् इसके भविष्य का लक्ष्य निर्धारित करने के लिए हमें तीन चरणों में कार्य करने पडेंगे—

१) प्रतिभा संपन्न विद्वान पंडित तैयार करना।
२) शोध-संशोधन-संपादन और प्रकाशन आदि के लिए उपयोगी संसाधनों की उपलब्धि और उनका सुनियोजित उपयोग।
३) उपलब्ध श्रुतसंपदा की सुरक्षा और संवर्धन के लिए परस्पर व्यापक समन्वय स्थापित करना।

विद्वानों को तैयार करने हेतु शिक्षा, शिक्षाव्यवस्था, अभ्यासक्रम और आजीविका का साधन उपलब्ध कराना चाहिए। संसाधनों का उपयोग कैसे करना है उसका मार्गदर्शन करना चाहिए। संस्कृत भाषा, प्राकृत भाषा एवं प्राकृत भाषा के प्रकार के इतिहास का ज्ञान होना चाहिए। एक भाषा दूसरी भाषा से कब और कैसे प्रभावित हुई उसके संदर्भ का ज्ञान चाहिए। विद्वान तैयार करने के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण परिमाण संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश भाषा सीखने की मार्गदर्शिका (मैन्युअल) चाहिए। इस मार्गदर्शिका के अनुसार भाषा सिखाने से जिज्ञासु अल्पसमय में और अल्प आयास में ही भाषा का ज्ञान प्राप्त कर सकता है।

इस दिशा में ज्ञान की धारा को प्रवाहित करने का नियोजनबद्ध कार्य श्रुतभवन संशोधन केंद्र, पुणे द्वारा गतिमान है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि, आगामी काल में वैश्विक स्तर का संपादनयुक्त प्रचुर साहित्य इस केंद्र से प्रगट होगा। निःसंदेह भविष्य के रेखांकन की यह मंगलकारी शुरुआत सिद्ध होगी।

८ मार्च २०१५ संघार्पण समारोह में प्रस्तुत वक्तव्य

संपूर्ण विश्व में भारतीय संस्कृति के मूलगामी अध्ययन का कार्य किसने किया? इस प्रश्न का उत्तर चौकांने जैसा है। अनेक ऐसे शास्त्रों पर सबसे अधिक कार्य जर्मनियों द्वारा हुआ है। अनेक ऐसे ग्रंथ है जिनका प्रथम संस्करण जर्मन से प्रकाशित हुआ है। बडी आश्चर्य तो यह है कि, पचास-सौ वर्ष बाद भी अब तक हम उनभी भारतीय आवृत्ति भी प्रकाशित नही कर पाये है।

जर्मनियों ने अपने शास्त्रों पर इतना बडा किस तरह कर पाये? इसके पीछे सबसे महत्त्वपूर्ण कारण था कि, जर्मनियों ने सबसे पहले विश्वभर की भिन्न-भिन्न भाषाओं के अलग-अलग प्रकार के कोष तैयार किये थे। जर्मन भाषा में संस्कृत भाषा का 'वॉटरबुच' नामक पृथक कोष है, इसके सात खंड है। प्रस्तुत कोष में प्रत्येक शब्दों के, अलग-अलग समय में कौन-कौन से परिवर्तन आये? कैसे कैसे विकास हुए, इन सब बातों का विवेचन है।

संस्कृत भाषा भारत की सभी भाषाओं की जननी है देवभाषा है, ये बात हम बडे गर्व के साथ कहते हैं, मगर हमारे 'वाटरबुच' का अनुवाद भी हम नही कर पाये है।

इंदिरा गांधी नेशनल कल्चर एन आर्ट (IGNCA) के अंतर्गत एक उपक्रम शुरु हुआ, जिसका केंद्रवर्ती विचार था कि, भारतीय संस्कृति की आधारभूतता क्या है? इस संदर्भ में विद्वानों का निष्कर्ष आया कि, लाखों शास्त्रों में चार सौ शास्त्र ऐसे है, जिन्हें आधारभूत शास्त्र कहा जा सकता है। इन चार सौ ग्रंथो के आधार पर अन्य हजारों ग्रंथो का सृजन हुआ है।

उपरोक्त ४०० ग्रंथों में से भी हजारों शब्द ऐसे ढूंढ निकाले हैं, जो भारतीय संस्कृति के मूलभूत शब्द हैं, जिनके आधार पर भिन्न-भिन्न ग्रंथ रचे गये। इन शब्दों के भिन्न-भिन्न विद्याशाखाओं में क्या अर्थ भरे पडे हैं? इस संदर्भ में विशद् शोध हुआ है। उदाहरणार्थ, 'भाव' शब्द का संगीत की क्षेत्र में क्या अर्थ है। आध्यात्मिक जगत में क्या अर्थ है। इस विषय को लेकर एक पृथक् ग्रंथ प्रकाशित हुआ 'कलामूलतत्त्व कोश' उपरोक्त आधार पर हमें भी शोधपूर्वक अध्ययन करना जरुरी होगा वे कौन-कौन से शब्द हैं, जिनके आधार पर प्रचुर जैन साहित्य का निर्माण हुआ है।

इस प्रकार के एक समृद्ध जैनशब्द कोष निर्माण भी बडी आवश्यकता है कि जैन दर्शन और साहित्य में अभिरुचि रखने वाले विद्वानों के लिए महत्त्वपूर्ण सहायक सिद्ध होगा।

ग्रंथ परिचय

लक्षणसंग्रह

जैनदर्शन के अध्ययन में न्यायदर्शन को आधार स्वरूप पढा जाता है। इसी शृंखलानुसार न्यायदर्शन पर आधारित लक्षणसंग्रह ग्रंथ लगभग २०० वर्ष पूर्व, विद्वान श्री नरोत्तम भट्ट द्वारा संस्कृत भाषा में रचा। इस ग्रंथ कि शारदा लिपि में उपलब्ध एकमात्र पांडुलिपि पुणे स्थित भांडारकर प्राच्यविद्या संशोधन संस्था में उपलब्ध है। आज वर्तमान में, कश्मीर की इस शारदा लिपि के मात्र १५० से २०० जानकार व्यक्ति है पूज्य साध्वीश्री **जिनरत्नाश्रीजी** म.सा. की शिष्या पूज्य साध्वी श्री **मधुरहंसाश्री** एवं पूज्य साध्वी श्री **धन्यहंसाश्री** म.सा.ने १३ वर्ष की उम्र में शारदा लिपि में रचित इस ग्रंथ का वर्तमान लिपि में लिप्यंतर किया है। इस महत्तम सृजनात्मक कार्य के प्रति, पुणे विश्वविद्यालय के दर्शन विभाग ने हतप्रभ भाव सहित विशेष प्रशंसा की है।

समाचार

श्रुतभवन द्वारा इस वर्ष में प्रकाशित सात ग्रंथों के विभिन्न स्थानों पर विराजित आचार्य भगवंतों की निश्रा में विमोचन संपन्न हुए।

- **२३ जुलाई २०१७**

  'धर्मबिंदु'

  (लाभार्थी - श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ आराधक संघ, पुखराज रायचंद आराधना भवन, साबरमती)

  पूज्य गच्छाधिपति आचार्यदेव

  श्री **विजयपुण्यपालसूरीश्वरजी** म.सा.,

  पूज्य आचार्यदेव श्री **विजययोगतिलकसूरिजी** म.सा.

- **८ अगस्त २०१७**

  'लक्षणसंग्रह'

  (लाभार्थी - श्री जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक तपगच्छ संघ, गोकाक - कर्नाटक)

  'अर्धमागधी व्याकरण'

  (लाभार्थी - श्री सीमंधर शांतिसूरि जैन ट्रस्ट, वी.वी.पुरम्, बेंगलोर)

  पूज्य आचार्यदेव श्री **विजयरत्नसेनसूरिजी** म.सा.

  पूज्य आचार्यदेव श्री **चंद्रजितसूरिजी** म.सा.

- **१३ अगस्त २०१७**

  'मंडल विचार प्रकरण',

  'अष्टाह्निका धुराख्यान',

  'आत्मशुद्धि प्रकाश'

  (स्थान एवं लाभार्थी - श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जैन मू.पू.संघ नासिक)

  निश्रा - पूज्य मुनिराजश्री **निर्मलयशविजयजी** म.सा.

- **१५ अगस्त २०१७**

  'धर्मबिंदु ', 'स्तोत्रसंग्रह'

  (लाभार्थी - परम पूज्य आचार्यदेव श्री विजयतीर्थभद्रसूरिजी म.सा. के प्रेरणा से श्री घाटकोपर जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक तपगच्छ संघ, घाटकोपर - मुंबई)

  पू.पंन्यासप्रवर श्री **मोक्षरतिविजयजी** गणिवर

  पू.पंन्यासप्रवर श्री **तत्त्वदर्शनविजयजी** गणिवर

२४ सितंबर २०१७ पू.साध्वीजी श्री **जिनरत्नाश्रीजी** म.सा. की निश्रा में ९ ग्रंथो का संघार्पण समारोह संपन्न हुआ। कद से छोटे पर दिलसे बडे श्री दादरा जैन संघ ने बडे उल्लास के साथ श्रुत बहुमान का अद्भुत आयोजन किया। सुरत, मुंबई, पुणे, वापी आदि के श्रुतभक्तों की उपस्थिति रही।

श्रुतभवन संशोधन केंद्र कार्य विवरण

संशोधन विभाग के अंतर्गत पांच भिन्न-भिन्न हस्तप्रतों के आधार पर **लोकप्रकाश** ग्रंथ का संपादन जारी है, अब तक छः सर्गो का कार्य पूर्ण हो चुका है। प्रस्तुत ग्रंथ पद्य में लिखित है उसका संस्कृत गद्यानुवाद हो रहा है। इस ग्रंथ में उल्लिखित व्याख्याओं का कोश भी तैयार हो रहा है। ग्रंथकार द्वारा प्रस्तुत शास्त्र संदर्भ के मूल ढुंढकर, टीका सहित संकलित करने का कार्य हो रहा है। इसके अलावा उद्धरणों का भी संकलन किया जा रहा है। ग्रंथ में दर्शित मतमतांतरो का भी समावेश किया जा रहा है। विशेष नाम आदि उल्लेख हो रहा है। ध्यानपूर्वक लक्षित कोष्टक भी तैयार किये जा रहे है।

वर्धमान जिनरत्नकोश के अंतर्गत **जैन कृति एवं कृतिकार कोश** निर्माण हो रहा है। विगत २६०० वर्षों में संस्कृत, प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषा में रचित शास्त्रों एवं रचनाकारों आदि का सूचिबद्ध संकलन कार्य चल रहा है। आगम साहित्य में अब तक लगभग ५०० कृतियों की जानकारियों का दस्तावेजीकरण संपन्न हो चुका है।

गुजरात के दो भंडारों की हस्तप्रतियों का स्केन कार्य पूरा हो चूका है। साथ ही स्केन हुए छः भंडारों सूचिपत्र भी तैयार हो चुका है।

आ.श्री वि.**मुनिचंद्रसू.** म.सा., आ. श्री **नयचंद्रसागरसू.**म.सा., आ.श्री वि.**कुलचंद्रसू.**म.सा., पू.मुनिश्री **योगरुचि वि.** म.सा., पू.गणिश्री **सुयश-सुजसचंद्र** वि.म.सा., पं.**श्रीश्रुततिलकविजयजी** गणी, मुनिश्री **तीर्थयश** वि.म.सा. (आ.श्री **यशोवर्मसूरि** म.), पू. मुनिश्री **मेहुलप्रभसागर** म.सा., पू. सा. **कुमुदरेखाश्रीजी** म., श्री **नीरजमुनिजी** (आचार्य रामलालजी संप्रदाय), समणी **श्रीसुलभप्रज्ञाजी** (जैन विश्व भारती, लाडनूं), **विजयपाल शास्त्री** (पतंजली योगपीठ) को पांडुलिपिओं की जानकारी दी।

अभिप्राय

श्रुतभवन का दर्शन किया। वर्तमान समय में अतिशय उपेक्षित क्षेत्र श्रुतज्ञान है। इस क्षेत्र में संशोधन होना बहुत महत्त्वपूर्ण है। हालांकि, पुण्यविजयजी म., पू.सागरजी म., पू.जंबूविजयजी म. आदि महापुरुषों ने इस क्षेत्र में अनेक कार्य किए हैं। इसी श्रृंखला में शोभायमान होता हुआ कार्य यह श्रुतभवन है।

कई वर्षों की कठिन श्रुतसाधना के बाद ऐसा भगीरथ कार्य निर्माण होता है। इस विषय में पू.मु. वैराग्यरतिवि. म.सा. और श्रुतभवन संस्था से जुड़े हुए सभी धन्यवाद और अनुमोदना के पात्र है। आपकी श्रुतसंशोधन की क्षमता दिन-प्रतिदिन बढती रहे यही प्रभुप्रार्थना।

- पू.आ.श्री **नयचंद्रसागरसूरिजी** म.
महाशतावधानी मु. श्री **अजितचंद्रसागरजी** म.

सच्चे फूल को इत्र की जरुरत नहीं पडती
और
सच्चे मन के आदमी को
प्रशंसा की जरुरत नहीं पडती।

- पू.मु.श्री वैराग्यरतिविजयजी गणिवर

प्रबंध संपादक
गौरव के. शाह (९८३३१३९८८३)

Printed Matter
Posted under clause 121 & 114 (7) of P & T Guide

To,

From
Shrutbhavan Research Centre,
47/48, Achal Farm, Nr. Sachchai Mata Mandir, Ahead of Jain Agam Temple, Katraj, Pune-411046
Mo. 07744005728 Email : shrutbhavan@gmail.com Website : www.shrutbhavan.org